महान कौन?

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

महान वो होता है जो महान कार्य करता है। महानता खरीदी और बेची नहीं जाती बल्कि यह एक अर्जित सम्पदा है। व्यक्ति अपने कार्यों से महान होता है। कुछ लोग महान पैदा होते हैं, कुछ महानता अर्जित करते हैं और कुछ लोगों पर महानता थोप दी जाती है। इन तीनों में महान वही है जो अपने पुरुषार्थ से महानता को अर्जित करता है। भारत में बहुत राजे और महाराजे महान कहे गये हैं। उनके कार्यों को देखकर उन्हें महान कहा गया है। भगवान् बुद्ध, भगवान् महावीर महान् थे। दोनों बिहार की धरती पर जन्म लिया और नये धर्म का परिवर्तन करके विश्व कीर्तिमान स्थापित किया। सभी व्यक्ति पहले सामान्य ही होते हैं किन्तु उनकी जीवन दृष्टि उनको महान बना देती है। महात्मा गांधी कैसे महान् कहलाये? भारत में भारत रत्न प्राप्त करने वाले महापुरुष सभी साधारण परिवार से थे। साधारण पारिवारिक स्थिति होते हुए भी उन्होंने अपने पुरुषार्थ से अपने भाग्य का निर्माण किया और भारत रत्न कहलाये। डॉ. राधाकृष्णन्, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद भारत के प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी एक साधारण गरीब परिवार में जन्म लेकर अपने पुरुषार्थ से महानता अर्जित की। महान् व्यक्ति स्वयं की महानता से अपने देश को भी महान बना देता है। ऐसे व्यक्तियों के जन्म लेने से कुल पवित्र हो जाता है। मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराम ने मर्यादा की वह लकीर खींची है जिसे तोड़ना असम्भव है। प्राण जाये पर वचन न जायी उनके जीवन का सिद्धान्त था। इसीलिए आज पूरे विश्व में उनके द्वारा बनायी गयी मर्यादा का गुणगान होता है।

मोती प्राप्त करने के लिए मानव को समुद्र की गहराई में जाकर उसे ढूंढना पड़ता है। समुद्र के अन्दर अनेक घातक जीव रहते हैं, जो मानव को पलक झपकते ही अपना निवाला बना सकते हैं। परन्तु अगर सुरक्षित समुद्र से निकल आये तो गोताखोर मोती को प्राप्त कर लेते हैं। इसी प्रकार किसी भी अच्छी चीज को प्राप्त करने के लिए मानव को प्राण का भय भी रहता है और वस्तु के प्राप्त हो जाने पर मालामाल हो जाने का सौभाग्य भी प्राप्त रहता है। अतः बिना जोखिम के अच्छी चीजों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जो लोग प्राण जाने के

भय से डरकर समुद्र के किनारे बैठे रहते हैं या किसी भी प्रकार का रिस्क नहीं लेते सफलता उनसे कोसों दूर रहती है। जीवन के हर पहलू पर इसे आजमाकर देखा जा सकता है। विद्यार्थी जब प्रतियोगितात्मक परीक्षा की तैयारी के लिए अपना सबकुछ न्यौछावर कर संलग्न हो जाते हैं तो उनके सामने यही उक्ति रहती है। यदि वे परीक्षा में सफल हो गये तो जीवनभर आनन्द ही आनन्द है और यदि परीक्षा में सफलता नहीं मिली तो जीवन कष्टप्रद रह सकता है। पपीहा पक्षी बड़ा ही स्वाभिमानी होता है। वह केवल स्वाती नक्षत्र के जल को ही पीता है और अन्य नक्षत्रों में जो वृष्टि होती है उसके जल को वह पान नहीं करता। उसको यह भरोसा रहता है कि वृष्टि अवश्य होगी और उसकी प्यास बुझेगी। इसीलिए स्वाभिमानी पक्षियों में सबसे पहले उसी का नाम लिया जाता है। आशा की किरण लेकर वह जीता है और उसको यह भरोसा रहता है कि स्वाती नक्षत्र की जल की बूंद उसके मुख में जायेगी और वह जल से तृप्त होगा। स्वाती नक्षत्र में सीप के मुंह में गिरा हुआ जल मोती बन जाता है। मनुष्य को किसी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बहुत परिश्रम करना पड़ता है। यदि परिश्रम सार्थक दिशा में होता है तो सफलता अवश्यंभावी है। यदि किसी कारणवश सफलता न भी मिले तो यह देखना चाहिए कि हमारे परिश्रम में क्या कमी रह गयी। लक्ष्य का निर्धारण करते समय मानव को अपनी शक्ति और संकल्प पर पूर्ण विश्वास रखना चाहिए उसे निराश नहीं होना चाहिए। मानव जीवन पृथ्वी के सम्पूर्ण जीव योनियों में सर्वश्रेष्ठ है। मानव जीवन सुकर्म करने से प्राप्त होता है। अतः सदाचार पूर्ण जीवन व्यतीत करना चाहिए।

मानव का आन्तरिक जगत् आत्मतत्व प्रधान है। आत्मा सर्वज्ञाता है, उसका ज्ञान सर्वव्यापक है। किन्तु वह दिखायी नहीं देता, केवल उसकी प्रतीति होती है। योगी लोग आत्मतत्व को अपने योग के द्वारा जान लेते हैं और परोक्ष रूप से उसका दर्शन भी कर लेते हैं। चर्म चक्षुओं से केवल बाह्य संसार दिखायी देता है। स्थूल से स्थूल को ही देखा जा सकता है, सूक्ष्म को नहीं देखा जा सकता। जिसकी अन्तःप्रज्ञा जागृत होती है केवल वही उस सूक्ष्म तत्व को जान सकता है और देख सकता है। कार्य के प्रति निष्ठा ही मनुष्य को महान् बनाती है। जब लक्ष्य भेदने के लिए अर्जुन गये तो अर्जुन से पूछा गया कि इस समय क्या देख रहे हो। अर्जुन ने कहा कि मैं इस समय मछली की आंख देख रहा हूं जिसे वाण से भेदना है और सभी योद्धाओं

ने इस प्रश्न का यह उत्तर दिया था कि मैं मछली को देख रहा हूं। सभी यौद्धाओं के उत्तर और अर्जुन के उत्तर में महान अन्तर दिखलायी देता है। जब मुकाबला प्रतिस्पर्धा पूर्ण हो तो लक्ष्य के प्रति सजगता बहुत आवश्यक है। अगर सभी राजाओं की तरह अर्जुन भी लक्ष्य के प्रति असावधान होते तो हो सकता है कि सफलता उनका वरण न करती। किन्तु अर्जुन लक्ष्य के प्रति पूर्ण समर्पित होकर लक्ष्य का भेदन किये और लक्ष्य प्राप्ति में सफल रहे। इससे यह सिद्ध होता है कि सफलता प्राप्त करने के लिए पूर्ण मनोयोग से लक्ष्यबद्ध होना पड़ता है। तभी सफलता और महानता प्राप्त होती है। जिस राष्ट्र में अच्छे लोग होते हैं वह राष्ट्र भी महान् होता है।